

# श्रावक प्रतिक्रमण सूत्र (मूल)



प्रकाशक

सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल

(संरक्षक : अखिल भारतीय श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ)

# श्रावक प्रतिक्रमण सूत्र (मूल)



प्रकाशक

सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल

(संरक्षक : अ.भा. श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ)

# श्रावक प्रतिक्रमण सूत्र (मूल)

अन्य प्राप्ति स्थल :

प्रकाशक :

सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल

दुकान नं. 182 के ऊपर,  
बापू बाजार, जयपुर-03 (राज.)

फोन : 0141-2575997

फैक्स : 0141-4068798

Email : sgpmandal@yahoo.in

प्रथम संस्करण : 2016

मुद्रित प्रतियाँ : 2100

मूल्य : **5.00/-** (पाँच रुपये मात्र)

लेजर टाइपसैटिंग

सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल

मुद्रक : दी डायमण्ड प्रिन्टिंग प्रेस, जयपुर

- श्री स्थानकवासी जैन स्वाध्याय संघ  
घोड़ों का चौक, जोधपुर-342001 (राज.)  
फोन : 0291-2624891
- **Shri Navratan ji Bhansali**  
C/o. Mahesh Electricals,  
14/5, B.V.K. Ayangar Road,  
**BANGALURU-560053**  
(Karnataka)  
Mob. : 09844158943
- श्री प्रकाशचन्द्रजी सालेचा  
16/62, चौपासनी हाउसिंग बोर्ड,  
जोधपुर-342001 (राजस्थान)  
फोन : 9461026279
- श्रीमती विजयानन्दिनी जी मल्हारा  
“रत्नसागर”, कलेक्टर बंगला रोड़,  
चर्च के सामने, 491-ए, प्लॉट नं. 4,  
जलगाँव-425001 (महा.)  
फोन : 0257-2223223
- श्री दिनेश जी जैन  
1296, कटरा धुलिया, चाँदनी चौक,  
दिल्ली-110006 फोन : 011-23919370  
मो. 09953723403

## प्रकाशकीय

‘श्रावक सामायिक प्रतिक्रमण सूत्र (मूल)’ पुस्तक का यह संस्करण प्रकाशित करते हुए हमको अतीव प्रसन्नता हो रही है।

सामायिक समभाव की साधना है जो अनुकूल व प्रतिकूल विषयों में सम रहने की प्रेरणा देती है। प्रतिक्रमण (आवश्यक सूत्र) के माध्यम से हम व्रतों में हुई स्खलना का चिन्तन कर उसे दूर करने का प्रयास करते हैं तथा भविष्य में दोषों की पुनरावृत्ति न हो इस हेतु भी प्रतिज्ञाबद्ध होते हैं। अतः जीवन के लिए दोनों ही क्रियाएँ आवश्यक हैं।

प्रस्तुत संस्करण का प्रूफ संशोधन आध्यात्मिक शिक्षा समिति में सेवारत श्री राकेश कुमारजी जैन,

जयपुर ने किया तथा लेज़र टाइप सेटिंग श्री प्रह्लाद नारायण जी लखेरा द्वारा की गई है। अतः मण्डल परिवार इन सभी का हार्दिक आभार प्रकट करता है।

प्रारंभिक स्तर पर प्रतिक्रमण सूत्र को याद करने हेतु “श्रावक प्रतिक्रमण सूत्र (मूल)” पुस्तक का सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल द्वारा प्रकाशन किया जा रहा है।

आशा है उक्त पुस्तक सभी वर्ग के श्रावक-श्राविकाओं व बालक-बालिकाओं के ज्ञानवृद्धि में उपयोगी सिद्ध होगी।

:: निवेदक ::

पारसचन्द हीरावत      प्रमोद मोहनोत      विनयचन्द डागा  
पदमचन्द कोठारी

अध्यक्ष

कार्याध्यक्ष

मन्त्री

**सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल**

॥ श्री महावीराय नमः ॥

## 1. इच्छामि णं भंते का पाठ

इच्छामि णं भंते ! तु ब्धेहिं अब्धणुण्णाए समाणे देवसियं<sup>1</sup>  
पडिक्कमणं ठाएमि देवसिय-नाण-दंसण-चरित्ताचरित्त-तव-  
अइयार-चिंतणत्थं करेमि काउस्सगं ।

## 2. इच्छामि ठामि का पाठ

इच्छामि ठामि काउस्सगं जो मे देवसियो<sup>2</sup> अइयारो  
कओ, काइओ, वाइओ, माणसिओ, उस्सुत्तो, उम्मगो,  
अकप्पो, अकरणिज्जो, दुज्ज्ञाओ, दुब्बिचिंतिओ, अणायारो,  
अणिच्छियव्वो, असावगपाउग्गो, नाणे तह दंसणे,  
चरित्ताचरित्ते, सुए सामाइए, तिण्हं गुत्तीणं, चउण्हं कसायाणं,  
पंचण्हमणुव्वयाणं, तिण्हं गुणव्वयाणं, चउण्हं सिक्खावयाणं

- 
- प्रातःकाल में राइयं, पक्खी के दिन पक्खियं, चौमासी के दिन चाउमासियं और संवत्सरी के दिन संवच्छरियं बोलें ।
  - प्रातःकाल में राइयो, पक्खी के दिन पक्खिओ, चौमासी के दिन चाउमासिओ और संवत्सरी के दिन संवच्छरिओ बोलें ।

बारस-विहस्स सावग-धम्मस्स, जं खंडियं जं विराहियं तस्स  
मिच्छा मि दुक्कडं ॥<sup>1</sup>

### 3. आगमे तिविहे का पाठ

आगमे तिविहे पण्णते तं जहा-सुत्तागमे, अत्थागमे,  
तदुभयागमे, इस तरह तीन प्रकार के आगम रूप ज्ञान के विषय  
में जो कोई अतिचार लगा हो तो आलोउ-जं वाइद्धं,  
वच्चामेलियं, हीणक्खरं, अच्चक्खरं, पयहीणं, विणयहीणं,  
जोगहीणं, घोसहीणं, सुटुदिण्णं, दुट्ट-पडिच्छियं, अकाले  
कओ सज्जाओ, काले न कओ सज्जाओ, असज्जाइए  
सज्जायं, सज्जाइए न सज्जायं, भणता, गुणता, विचारता ज्ञान  
और ज्ञानवंत पुरुषों की अविनय आशातना की हो तो (इन  
अतिचारों में से मुझे कोई दिवस सम्बन्धी अतिचार लगा हो  
तो) तस्स मिच्छा मि दुक्कडं ॥

---

1. काउस्सण में इन सब पाठों में ‘मिच्छा मि दुक्कडं’ के स्थान पर ‘आलोउ’ कहें।

## 4. दर्शन सम्यकत्व का पाठ

अरिहंतो महदेवो, जावज्जीवं सुसाहुणो गुरुणो ।  
जिण-पण्णतं ततं, इअ सम्मतं मए गहियं ॥1 ॥  
परमत्थ-संथवो वा, सुदिट्ठ-परमत्थ-सेवणा वा वि ।  
वावण्ण-कुदंसण-वज्जणा, य सम्मत-सद्धणा ॥2 ॥  
इअ सम्मतस्स पंच अइयारा पेयाला जाणियब्बा न  
समायरियब्बा तं जहा ते आलोउ-संका, कंखा, वितिगिच्छा,  
परपासंड-पसंसा, परपासंड-संथवो ।

इस प्रकार श्री समकित रत्न पदार्थ के विषय में जो कोई  
अतिचार लगा हो तो आलोउ-1. श्री जिन वचन में शंका की  
हो, 2. परदर्शन की आकांक्षा की हो, 3. धर्म के फल में  
सन्देह किया हो, 4. पर पाखण्डी की प्रशंसा की हो, 5. पर  
पाखण्डी का परिचय किया हो और मेरे सम्यकत्व रूप रत्न पर  
मिथ्यात्व रूपी रज मेल लगा हो (इन अतिचारों में से मुझे कोई  
दिवस सम्बन्धी अतिचार लगा हो) तो तस्स मिच्छा मि  
दुक्कडं ।

## 5-16. पन्द्रह कर्मादान सहित

### बारह ब्रतों के अतिचार

1. पहला स्थूल प्राणातिपात-विरमण व्रत के विषय में जो कोई अतिचार लगा हो तो आलोउं-1. रोषवश गाढ़ा बंधन बांधा हो 2. गाढ़ा घाव घाला हो 3. अवयव<sup>1</sup> का छेद किया हो, 4. अधिक भार भरा हो, 5. भत्त पाणी का विच्छेद किया हो, इन अतिचारों में से मुझे कोई दिवस सम्बन्धी अतिचार लगा हो तो तस्स मिच्छा मि दुक्कड़ ।
  2. दूजा स्थूल मृषावाद-विरमण व्रत के विषय में जो कोई अतिचार लगा हो तो आलोउं-1. सहसाकार से किसी के प्रति कूड़ा आल (झूठा दोष) दिया हो, 2. एकान्त में गुप्त बातचीत करते हुए व्यक्तियों पर झूठा आरोप लगाया हो, 3. अपनी स्त्री का मर्म प्रकाशित किया हो<sup>2</sup>, 4. मृषा उपदेश दिया हो, 5. कूड़ा लेख
- 
1. अवयव-चाम आदि का ।
  2. स्त्रियाँ अपने पुरुष का मर्म प्रकाशित किया हो, बोलें ।

लिखा हो, इन अतिचारों में से मुझे कोई दिवस सम्बन्धी अतिचार लगा हो तो तस्स मिछ्छा मि दुक्कड़ ।

3. **तीजा स्थूल अदत्तादान** विरमण व्रत के विषय में जो कोई अतिचार लगा हो तो आलोउं-1. चोर की चुराई हुई वस्तु ली हो, 2. चोर को सहायता दी हो, 3. राज्य के विरुद्ध काम किया हो, 4. कूड़ा तोल कूड़ा माप किया हो, 5. वस्तु में भेल संभेल किया हो, इन अतिचारों में से मुझे कोई दिवस सम्बन्धी अतिचार लगा हो तो तस्स मिछ्छा मि दुक्कड़ ।
4. **चौथा स्थूल स्वदार संतोष परदार विवर्जन<sup>1</sup>** रूप मैथुन विरमण व्रत के विषय में जो कोई अतिचार लगा हो तो आलोउं-1. इत्तरियपरिग्नहिया<sup>2</sup> से गमन किया हो, 2. अपरिग्नहिया<sup>2</sup> से गमन किया हो, 3. अनंग क्रीड़ा की हो, 4. पराये का विवाह नाता कराया हो,

---

1. स्त्रियाँ-स्वपति संतोष, परपुरुष विवर्जन बोलें ।

2. इत्तरियपरिग्नहिया के स्थान पर स्त्रियाँ इत्तरियपरिग्नहिय तथा अपरिग्नहिया के स्थान पर अपरिग्नहिय बोलें ।

5. काम भोग की तीव्र अभिलाषा की हो, इन अतिचारों में से मुझे कोई दिवस सम्बन्धी अतिचार लगा हो तो तस्स मिछ्छा मि दुक्कड़ ।
5. पाँचवाँ स्थूल परिग्रह विरमण व्रत के विषय में जो कोई अतिचार लगा हो तो आलोउं-1. खेत-वत्थु का परिमाण अतिक्रमण किया हो, 2. हिरण्य-सुवर्ण का परिमाण अतिक्रमण किया हो, 3. धन-धान्य का परिमाण अतिक्रमण किया हो, 4. दोपद-चौपद का परिमाण अतिक्रमण किया हो, 5. कुविय का परिमाण अतिक्रमण किया हो, इन अतिचारों में से मुझे कोई दिवस सम्बन्धी अतिचार लगा हो तो तस्स मिछ्छा मि दुक्कड़ ।
6. छट्टे दिशिव्रत के विषय में जो कोई अतिचार लगा हो तो आलोउं-1. ऊँची, 2. नीची, 3. तिरछी दिशा का परिमाण अतिक्रमण किया हो, 4. क्षेत्र बढ़ाया हो, 5. क्षेत्र का परिमाण भूल जाने से, पंथ का संदेह पड़ने पर आगे चला हो, इन अतिचारों में से मुझे कोई दिवस सम्बन्धी अतिचार लगा हो तो तस्स मिछ्छा मि दुक्कड़ ।

7. सातवाँ उपभोग परिभोग परिमाण व्रत के विषय में जो कोई अतिचार लगा हो तो आलोउं-पच्चकखाण उपरान्त 1. सचित का आहार किया हो, 2. सचित प्रतिबद्ध का आहार किया हो, 3. अपक्व का आहार किया हो, 4. दुपक्व का आहार किया हो, 5. तुच्छौषधि का आहार किया हो, इन अतिचारों में से मुझे कोई दिवस सम्बन्धी अतिचार लगा हो तो तस्स मिच्छा मिदुक्कड़ ।

**पन्द्रह कर्मादान** जो श्रावक-श्राविका के जानने योग्य हैं किन्तु आचरण करने योग्य नहीं हैं, उनके विषय में जो कोई अतिचार लगा हो तो आलोउं-1. इंगाल-कम्मे, 2. वणकम्मे, 3. साडीकम्मे, 4. भाडीकम्मे, 5. फोडीकम्मे, 6. दन्त-वाणिज्जे, 7. लक्ख-वाणिज्जे, 8. रसवाणिज्जे, 9. केस-वाणिज्जे, 10. विसवाणिज्जे, 11. जंतपीलणकम्मे, 12. निलंछणकम्मे, 13. दवगिदावणया, 14. सरदह-तलाय-सोसणया, 15. असई-जण-

**पोसणया**, इन अतिचारों में से मुझे कोई दिवस सम्बन्धी अतिचार लगा हो तो तस्स मिच्छा मि दुक्कड़ं ।

8. **आठवें अनर्थदण्ड** विरमण व्रत के विषय में जो कोई अतिचार लगा हो तो आलोउं-1. काम-विकार पैदा करने वाली कथा की हो, 2. भण्ड-कुचेष्टा की हो, 3. मुखरी वचन बोला हो, 4. अधिकरण जोड़ रखा हो, 5. उपभोग-परिभोग अधिक बढ़ाया हो, इन अतिचारों में से मुझे कोई दिवस सम्बन्धी अतिचार लगा हो तो तस्स मिच्छा मि दुक्कड़ं ।
9. **नवमें सामायिक** व्रत के विषय में जो कोई अतिचार लगा हो तो आलोउं-1. मन, 2. वचन, 3. काया के अशुभ योग प्रवर्तये हों, 4. सामायिक की स्मृति न रखी हो, 5. समय पूर्ण हुए बिना सामायिक पाली हो, इन अतिचारों में से मुझे कोई दिवस सम्बन्धी अतिचार लगा हो तो तस्स मिच्छा मि दुक्कड़ं ।
10. **दसवें देशावकाशिक** व्रत के विषय में जो कोई अतिचार लगा हो तो आलोउं-1. नियमित सीमा के

बाहर की वस्तु मँगवाई हो, 2. भिजवाई हो, 3. शब्द करके चेताया हो, 4. रूप दिखा करके अपने भाव प्रकट किये हों, 5. कंकर आदि फेंककर दूसरे को बुलाया हो, इन अतिचारों में से मुझे कोई दिवस सम्बन्धी अतिचार लगा हो तो तस्स मिच्छा मि दुक्कडं ।

11. ग्यारहवें प्रतिपूर्ण पौष्ठ व्रत के विषय में जो कोई अतिचार लगा हो तो आलोउं-1. पौष्ठ में शय्या संथारा न देखा हो या अच्छी तरह से न देखा हो, 2. प्रमार्जन न किया हो या अच्छी तरह से न किया हो, 3. उच्चार पासवण की भूमि को न देखी हो या अच्छी तरह से न देखी हो, 4. पूँजी न हो या अच्छी तरह से न पूँजी हो, 5. उपवास युक्त पौष्ठ का सम्यक् प्रकार से पालन न किया हो, इन अतिचारों में से मुझे कोई दिवस सम्बन्धी अतिचार लगा हो तो तस्स मिच्छा मि दुक्कडं ।
12. बारहवें अतिथि संविभाग व्रत के विषय में जो कोई अतिचार लगा हो तो आलोउं-1. अचित्त वस्तु सचित्त पर रखी हो, 2. अचित्त वस्तु सचित्त से ढाँकी हो, 3.

साधुओं को भिक्षा देने के समय को टाल कर भावना भायी हो, 4. आप सूझता होते हुए भी दूसरों से दान दिलाया हो, 5. मत्सर (ईर्ष्या) भाव से दान दिया हो, इन अतिचारों में से मुझे कोई दिवस सम्बन्धी अतिचार लगा हो तो तस्स मिछ्छा मि दुक्कड़ ।

## 17. संलेखना के पाँच अतिचार का पाठ

संलेखना के विषय में जो कोई अतिचार लगा हो तो आलोउं-(1) इस लोक के सुख की कामना की हो, (2) परलोक के सुख की कामना की हो, (3) जीवित रहने की कामना की हो, (4) मरने की कामना की हो, (5) कामभोग की कामना की हो, इन अतिचारों में से मुझे कोई दिवस सम्बन्धी अतिचार लगा हो तो तस्स मिछ्छा मि दुक्कड़ ॥

## 18. 99 अतिचारों का (समुच्चय) पाठ

इस प्रकार 14 ज्ञान के, 5 समकित के, 60 बारह ब्रतों के, 15 कर्मदान के, 5 संलेखना के इन 99 अतिचारों में से

किसी भी अतिचार का जानते, अजानते, मन, वचन, काया से सेवन किया हो, कराया हो, करते हुए को भला जाना हो तो अनन्त सिद्ध केवली भगवान की साक्षी से जो मे देवसिओ अइयारो कओ तस्स मिच्छा मि दुक्कडं ॥

## 19. अठारह पाप स्थान का पाठ

अठारह पाप स्थान आलोउँ-1. प्राणातिपात, 2. मृषावाद, 3. अदत्तादान, 4. मैथुन, 5. परिग्रह, 6. क्रोध, 7. मान, 8. माया, 9. लोभ, 10. राग, 11. द्रेष, 12. कलह, 13. अभ्याख्यान, 14. पैशुन्य, 15. परपरिवाद, 16. रति-अरति, 17. माया-मृषावाद, 18. मिथ्यादर्शन शल्य, इन 18 पाप स्थानों में से किसी का सेवन किया हो, कराया हो, करते हुए को भला जाना हो तो अनन्त सिद्ध केवली भगवान की साक्षी से जो मे देवसिओ अइयारो कओ तस्स मिच्छा मि दुक्कडं ।

फिर तिक्खुत्तो के पाठ से तीन बार वन्दना करें, पहला सामायिक आवश्यक समाप्त हुआ ।

## 20. इच्छामि खमासमणो का पाठ

इच्छामि खमासमणो ! वंदिउं जावणिज्जाए निसीहियाए  
अणुजाणह मे मिउग्गहं, निसीहि, अहो कायं काय-संफासं  
खमणिज्जो भे ! किलामो अप्पकिलंताणं बहुसुभेणं भे ! दिवसो  
वइकंकंतो<sup>1</sup> जत्ता भे जवणि जं च भे खामेमि खमासमणो,  
देवसियं<sup>2</sup> वइकंकमं आवस्सियाए पडिक्कमामि खमासमणाणं  
देवसिआए<sup>3</sup> आसायणाए तित्तिसन्नयराए जं किंचि मिच्छाए,  
मण-दुक्कडाए, वय-दुक्कडाए, काय-दुक्कडाए कोहाए  
माणाए मायाए लोहाए सव्वकालियाए, सव्वमिच्छोवयाराए,  
सव्व धम्माइक्कमणाए आसायणाए जो मे देवसिओ<sup>4</sup> अइयारो  
कओ तस्स खमासमणो, पडिक्कमामि, निंदामि, गरिहामि,  
अप्पाणं वोसिरामि ।

- 
- 1-4. देवसिक प्रतिक्रमण में बोलना चाहिए-दिवसो वइकंकंतो, देवसियं वइकंकमं,  
देवसियाए आसायणाए, देवसियो अइयारो ।  
रात्रिक प्रतिक्रमण में बोलना चाहिए-राइ वइकंकंता, राइयं वइकंकमं, राइयाए  
आसायणाए, राइओ अइयारो ।  
पाक्षिक प्रतिक्रमण में बोलना चाहिए-पक्खो वइकंकंतो, पक्खियं वइकंकमं,  
पक्खियाए आसायणाए, पक्खिओ अइयारो ।  
चातुर्मासिक प्रतिक्रमण में बोलना चाहिए-चाउम्मासो वइकंकंतो, चाउम्मासियं  
वइकंकमं, चाउम्मासियाए आसायणाए, चाउम्मासिओ अइयारो ।  
4. सांवत्सरिक प्रतिक्रमण में बोलना चाहिए-संवच्छरो वइकंकंतो, संवच्छरियं  
वइकंकमं, संवच्छरियाए आसायणाए, संवच्छरिओ अइयारो ।

## 21. तस्स सव्वस्स का पाठ

तस्स सव्वस्स देवसियस्स<sup>1</sup>, अइयारस्स, दुब्भासिय-  
दुच्चिन्तिय-दुच्चिट्ठियस्स आलोयंतो पडिक्कमामि ।

## 22. चत्तारि मंगलं का पाठ

चत्तारि मंगलं, अरिहंता मंगलं, सिद्धा मंगलं, साहू  
मंगलं, केवलिपण्णतो धम्मो मंगलं । चत्तारि लोगुत्तमा,  
अरिहंता लोगुत्तमा, सिद्धा लोगुत्तमा, साहू लोगुत्तमा, केवलि-  
पण्णतो धम्मो लोगुत्तमो । चत्तारि सरणं पवज्जामि, अरिहंते  
सरणं पवज्जामि, सिद्धे सरणं पवज्जामि, साहू सरणं पवज्जामि,  
केवलि-पण्णतं धम्मं सरणं पवज्जामि । अरिहन्तों का शरणा,  
सिद्धों का शरणा, साधुओं का शरणा, केवली प्ररूपित दया  
धर्म का शरणा ।

चार शरणा दुःख हरणा और न शरणा कोय ।

जो भव्य प्राणी आदरे तो अक्षय अमर पद होय ॥

- 
- प्रातःकाल में राइयस्स, पक्खी के दिन पक्खियस्स, चौमासी के दिन चाउमासियस्स और संवत्सरी के दिन संवच्छरियस्स शब्द बोलें ।

## 23. दंसण समत्त का पाठ

दंसण-समत्त-परमत्थ-संथवो वा, सुदिङ्गु-परमत्थ-  
सेवणा वा वि ।

वावण्ण-कुदंसण-वज्जणा, य समत्त-सद्धणा ॥

इअ सम्मत्स्स पंच-अइयारा पेयाला जाणियव्वा न  
समायरियव्वा तं जहा ते आलोउँ-1. संका, 2. कंखा, 3.  
वितिगिच्छा, 4. पर-पासंड-पसंसा, 5. परपासंड-संथवो,  
जो मे देवसिओ अइयारो कओ तस्स मिच्छा मि दुक्कडं ॥

## 24-35. बारह व्रत अतिचार सहित

1. पहला अणुब्रत-थूलाओ पाणाइवायाओ वेरमणं,  
त्रसजीव, बेइन्द्रिय, तेइन्द्रिय, चउरिन्द्रिय, पंचेन्द्रिय, जान के  
पहिचान के, संकल्प करके, उसमें सगे सम्बन्धी व स्व शरीर  
के भीतर में पीड़ाकारी, सापराधी को छोड़कर निरपराधी को  
आकुट्टी की बुद्धि से हनने का पच्चक्खाण, जावज्जीवाए दुविहं  
तिविहेणं न करेमि, न कारवेमि, मणसा, वयसा, कायसा ऐसे

पहले स्थूल प्राणातिपात विरमण ब्रत के पंच-अइयारा पेयाला  
जाणियव्वा, न समायरियव्वा तं जहा ते आलोउं-बंधे, वहे,  
छविच्छेए, अइभारे, भत्तपाण-विच्छेए, जो मे देवसिओ  
अइयारो कओ तस्स मिच्छा मि दुक्कडं ॥

2. दूजा अणुब्रत-थूलाओ मुसावायाओ वेरमणं,  
कन्नालीए, गोवालीए, भोमालीए, णासावहारो, कूडसकिखिज्जे  
इत्यादि मोटा झूठ बोलने का पच्चकखाण, जावज्जीवाए दुविहं  
तिविहेणं न करेमि, न कारवेमि, मणसा, वयसा, कायसा, एवं  
दूजा स्थूल मृषावाद विरमण ब्रत के पंच-अइयारा जाणियव्वा  
न समायरियव्वा तं जहा ते आलोउं-सहस्सब्भकखाणे,  
रहस्सब्भकखाणे, सदारमंत-भेए<sup>1</sup>, मोसोवएसे, कूडलेहकरणे,  
जो मे देवसिओ अइयारो कओ तस्स मिच्छा मि दुक्कडं ॥

3. तीजा अणुब्रत-थूलाओ अदिणणादाणाओ  
वेरमणं, खात खनकर, गाँठ खोलकर, ताले पर कूँची लगाकर,  
मार्ग में चलते हुए को लूटकर, पड़ी हुई धणियाती मोटी वस्तु  
जानकर लेना इत्यादि मोटा अदत्तादान का पच्चकखाण, सगे

1. स्त्रियाँ 'सदारमंतभेए' के स्थान पर 'सपइ-मंत-भेए' बोलें।

सम्बन्धी, व्यापार सम्बन्धी तथा पड़ी निर्भर्मी वस्तु के उपरान्त अदत्तादान का पच्चक्खाण जावज्जीवाए दुविहं तिविहेणं न करेमि, न कारवेमि, मणसा, वयसा, कायसा एवं तीजा स्थूल अदत्तादान विरमण व्रत के पंच-अइयारा जाणियव्वा न समायरियव्वा तं जहा ते आलोउं-तेनाहडे, तक्करप्पओगे, विरुद्ध-रज्जाइक्कमे, कूडतुल्ल-कूडमाणे, तप्पडिरुवगव-वहरे, जो मे देवसिओ अइयारो कओ तस्स मिच्छा मि दुक्कडं ॥

**4. चौथा अणुब्रत-** थूलाओ मेहुणाओ वेरमणं, सदार<sup>1</sup>-संतोसिए अवसेस-मेहुणविहिं पच्चक्खामि, जावज्जीवाए देव-देवी सम्बन्धी दुविहं तिविहेणं, न करेमि, न कारवेमि, मणसा, वयसा, कायसा तथा मनुष्य तिर्यच सम्बन्धी एगविहं एगविहेणं न करेमि, कायसा एवं चौथा स्थूल स्वदार संतोष, परदार<sup>2</sup> विवर्जन रूप मैथुन विरमण व्रत के पंच अइयारा जाणियव्वा न समायरियव्वा तं जहा ते आलोउं-इत्तरिय-परिग्नहिया-गमणे, अपरिग्नहिया-गमणे<sup>3</sup>, अनंगकीडा,

1. स्त्री को 'सदार' के स्थान पर 'सप्फ़' बोलना चाहिए।
2. स्त्री को 'स्वदार संतोष परदार' के स्थान पर 'स्वपति संतोष परपुरुष' बोलना चाहिए।
3. स्त्री को 'इत्तरियपरिग्नहिया-गमणे' के स्थान पर 'इत्तरियपरिग्नहिय-गमणे' तथा 'अपरिग्नहिया-गमणे' के स्थान पर 'अपरिग्नहिय-गमणे' बोलना चाहिए।

परविवाह-करणे, कामभोगातिव्वाभिलासे, जो मे देवसिओ  
अइयारो कओ तस्स मिच्छा मि दुक्कडं ॥

**5. पाँचवाँ अणुब्रत-**थूलाओ परिग्रहाओ वेरमणं,  
खेत्त-वत्थु का यथा परिमाण, हिरण्ण-सुवण्ण का यथा  
परिमाण, धण-धण्ण का यथा परिमाण, दुप्पय-चउप्पय का  
यथा परिमाण, कुविय का यथा परिमाण एवं जो यथा परिमाण  
किया है उसके उपरान्त अपना करके परिग्रह रखने का  
पच्चक्खाण जावज्जीवाए एगविहं तिविहेण न करेमि, मणसा,  
वयसा, कायसा एवं पाँचवाँ स्थूल परिग्रह विरमण ब्रत के पंच-  
अइयारा जाणियव्वा न समायरियव्वा तं जहा ते आलोउं-  
खेत्तवत्थुप्पमाणाइक्कमे, हिरण्ण-सुवण्ण-प्पमाणाइक्कमे,  
धणधण्णप्पमाणाइक्कमे, दुप्पय-चउप्प-यप्पमाणाइक्कमे,  
कुवियप्पमाणाइक्कमे, जो मे देवसिओ अइयारो कओ तस्स  
मिच्छा मि दुक्कडं ॥

**6. छट्टा दिशिब्रत-**उड्डिदिसी का यथा परिमाण,  
अहोदिसी का यथा परिमाण, तिरियदिसी का यथा परिमाण  
एवं जो यथा परिमाण किया है उसके उपरान्त स्वेच्छा काया से

आगे जाकर पाँच आस्त्रव सेवन का पच्चक्खाण, जावज्जीवाए एगविहं१ तिविहेणं न करेमि<sup>1</sup>, मणसा, वयसा, कायसा एवं छड़े दिशिब्रत के पंच-अइयारा जाणियव्वा न समायरियव्वा तं जहा ते आलोउ-उड्डिसिप्पमाणाइक्कमे, अहोदिसिप्प-माणाइक्कमे, तिरिय-दिसिप्पमाणाइक्कमे, खित्तवुड्डी, सइ-अंतरद्धा, जो मे देवसिओ अइयारो कओ तस्स मिच्छा मि दुक्कडं ॥

7. सातवाँ ब्रत-उपभोग परिभोगविहिं पच्चक्खायमाणे उल्लणियाविहि, दंतणविहि, फलविहि, अब्भंगणविहि, उवट्टणविहि, मज्जणविहि, वृथविहि, विलेवणविहि, पुफ्फ-विहि, आभरणविहि, धूविहि, पेज्जविहि, भक्खण-विहि, ओदणविहि, सूपविहि, विगयविहि, सागविहि, महुरविहि, जीमणविहि, पाणियविहि, मुखवासविहि, वाहणविहि, उवाणहविहि, सयणविहि, सचित्तविहि, दब्बविहि इन 26 बोलों का यथा परिमाण किया है, इसके उपरान्त उपभोग-परिभोग वस्तु को भोग निमित्त से भोगने का पच्चक्खाण जावज्जीवाए एगविहं तिविहेणं न करेमि, मणसा, वयसा, कायसा एवं सातवाँ

---

1. ‘एगविहं’ के स्थान पर ‘दुविहं’ और ‘न करेमि’ के स्थान पर ‘न करेमि, न कारवेमि’ भी बोलते हैं।

व्रत उपभोग परिभोग दुविहे पण्णते तं जहा, भोयणाओ य  
 कम्मओ य भोयणाओ समणोवासएणं पंच-अइयारा  
 जाणियव्वा न समायरियव्वा तं जहा ते आलोउं-सचित्ताहारे,  
 सचित्त-पडिबद्धाहारे, अप्पउली-ओसहि-भक्खणया,  
 दुप्पउली-ओसहि-भक्खणया, तुच्छोसहि-भक्खणया  
 कम्मओ य णं, समणोवासएणं पण्णरस-कम्मादाणाइं  
 जाणियव्वाइं, न समायरियव्वाइं तं जहा ते आलोउं-1.  
 इंगालकम्मे, 2. वणकम्मे, 3. साडीकम्मे, 4. भाडीकम्मे,  
 5. फोडीकम्मे, 6. दन्तवाणिज्जे, 7. लक्खवाणिज्जे, 8.  
 रस-वाणिज्जे, 9. केसवाणिज्जे, 10. विसवाणिज्जे, 11.  
 जंत-पीलणकम्मे, 12. निल्लंछ-णकम्मे, 13. दवगि-  
 दावणया, 14. सरदहतलाय-सोसणया, 15. असई-जण-  
 पोसणया, जो मे देवसिओ अइयारो कओ तस्स मिच्छा मि  
 दुक्कडं ॥

**8.आठवाँ अणट्टादण्ड-**विरमण व्रत चउब्बिहे  
 अणट्टादंडे पण्णते तं जहा-अवज्ञाणायरिये, पमायायरिये,  
 हिंसप्पयाणे, पावकम्मोवएसे एवं आठवाँ अणट्टादण्ड सेवन

का पच्चक्खाण, जिसमें आठ आगार-आए वा, राए वा, नाए वा, परिवारे वा, देवे वा, नागे वा, जकखे वा, भूए वा, एति इहं आगारे हिं अण्णात्थ जावज्जीवाए दुविहं तिविहेणं न करेमि, न कारवेमि, मणसा, वयसा, कायसा एवं आठवाँ अणद्वादण्ड विरमण ब्रत के पंच-अइयारा जाणियव्वा न समायरियव्वा तं जहा ते आलोउं-कंदप्पे, कुकुइए, मोहरिए, संजुत्ता-हिगरणे, उवभोगपरिभोगा-इरित्ते, जो मे देवसिओ अइयारो कओ तस्स मिच्छा मि दुक्कडं ॥

9. नवमाँ सामायिक ब्रत-सावज्जं जोगं पच्चक्खामि, जाव नियमं पज्जुवासामि दुविहं तिविहेणं न करेमि, न कारवेमि, मणसा, वयसा, कायसा, ऐसी मेरी सद्वहणा प्ररूपणा तो है सामायिक का अवसर आये, सामायिक करूँ तब फरसना करके शुद्ध होऊँ एवं नवमें सामायिक ब्रत के पंच-अइयारा जाणियव्वा न समायरियव्वा तं जहा ते आलोउं-मणदुप्पणिहाणे, वयदुप्पणिहाणे, काय-दुप्पणिहाणे, सामाइयस्स सइ अकरणया, सामाइयस्स अणवट्टियस्स करणया, जो मे देवसिओ अइयारो कओ तस्स मिच्छा मि दुक्कडं ॥

**10. दसवाँ देशावगासिक व्रत-**दिन प्रति प्रभात से प्रारम्भ करके पूर्वादिक छहों दिशाओं में जितनी भूमिका की मर्यादा रखी है, उसके उपरान्त पाँच आस्त्रव सेवन निमित्त स्वेच्छा काया से आगे जाने तथा दूसरों को भेजने का पच्चक्खाण जाव अहोरत्तं दुविहं तिविहेणं न करेमि, न कारवेमि, मणसा, वयसा, कायसा तथा जितनी भूमिका की हृद रखी है उसमें जो द्रव्यादि की मर्यादा की है, उसके उपरान्त उपभोग-परिभोग वस्तु को भोग निमित्त से भोगने का पच्चक्खाण जाव अहोरत्तं एगविहं तिविहेणं न करेमि, मणसा, वयसा, कायसा एवं दसवें देशावकाशिक व्रत के पंच-अइयारा जाणियव्वा न समायरियव्वा तं जहा ते आलोउ-आणवणप्पओगे, पेसवणप्पओगे, सद्वाणुवाए, रूवाणुवाए, बहियापुगलपक्खेवे, जो मे देवसिओ अइयारो कओ तस्स मिच्छा मि दुक्कडं ॥

**11. ग्यारहवाँ पडिपुण्ण पौष्ठ व्रत-**असणं, पाणं, खाइमं, साइमं का पच्चक्खाण, अबंभ सेवन का पच्चक्खाण, अमुकमणि सुवर्ण का पच्चक्खाण, मालावणग्ग-विलेवण का पच्चक्खाण, सत्थमूसलादिक सावज्जजोग सेवन का

पच्चकखाण, जाव अहोरत्तं पञ्जुवासामि दुविहं तिविहेणं न करेमि, न कारवेमि, मणसा, वयसा, कायसा ऐसी मेरी सद्दहणा प्ररूपणा तो है, पौष्ठ का अवसर आये, पौष्ठ करूँ तब फरसना करके शुद्ध होऊँ एवं ग्यारहवाँ प्रतिपूर्ण पौष्ठ ब्रत के पंच-अइयारा जाणियब्बा न समायरियब्बा तं जहा ते आलोउ-  
1. अप्पडिले हिय-दुप्पडिले हिय-सेज्जासंथारए, 2. अप्पमज्जियदुप्प-मज्जिय-सेज्जा-संथारए, 3. अप्पडिले हिय-दुप्पडि-ले हिय-उच्चार-पासवण-भूमि, 4. अप्पमज्जिय-दुप्पमज्जिय-उच्चार-पासवण-भूमि, 5. पोसहस्स सम्मं अणणुपालण्या, जो मे देवसिओ अइयारो कओ तस्स मिच्छा मि दुक्कडं ॥

12. बारहवाँ अतिथि संविभाग ब्रत-समणे निगंथे फासुयएस-णिज्जेणं, असण-पाण-खाइम-साइम-वत्थ-पडिगह-कंबल-पायपुंछणेणं, पडिहारिय-, पीढ-फलग-सेज्जासंथारएणं, ओसह-भेसज्जेणं, पडिलाभेमाणे विहरामि, ऐसी मेरी सद्दहणा प्ररूपणा तो है, साधु-साध्वियों का योग मिलने पर निर्दोष दान दूँ, तब फरसना करके शुद्ध होऊँ एवं

बारहवें अतिथि संविभाग ब्रत के पंच-अइयारा जाणियव्वा,  
न समायरियव्वा तं जहा ते आलोउं-सचित्त-निक्खेवणया,  
सचित्त-पिहणया, कालाइक्कमे, परववएसे, मच्छरियाए, जो  
मे देवसिओ अइयारो कओ तस्स मिच्छा मि दुक्कडं ॥

(फिर पालथी आसन से बैठकर बड़ी संलेखना का पाठ  
बोलें ।)

### 36. बड़ी संलेखना का पाठ

अह भंते ! अपच्छ्म-मारणंतिय-संलेहणा, झूसणा,  
आराहणा, पौषधशाला पूँज पूँज कर, उच्चारपासवण भूमि  
पडिलेह पडिलेह कर, गमणागमणे पडिक्कम पडिक्कम कर,  
दर्भादिक संथारा संथार संथार कर, दर्भादिक संथारा दुरुह दुरुह  
कर, पूर्व तथा उत्तर दिशा सम्मुख पल्यंकादिक आसन से बैठ-  
बैठ कर, करयल-संपरिगहियं सिरसावत्तं मत्थए अंजलि-  
कट्ट एवं वयासी-नमोत्थ णं अरिहंताणं भगवंताणं जाव  
संपत्ताणं, ऐसे अनन्त सिद्ध भगवान को नमस्कार करके,

‘नमोत्थुणं अरिहंताणं भगवंताणं जाव संपाविउकामाणं’

जयवन्ते वर्तमान काले महाविदेह क्षेत्र में विचरते हुए तीर्थङ्कर भगवान को नमस्कार करके अपने धर्माचार्य जी को नमस्कार करता हूँ। साधु प्रमुख चारों तीर्थों को खमा के, सर्व जीव राशि को खमाकर के, पहले जो ब्रत आदरे हैं, उनमें जो अतिचार दोष लगे हैं, वे सर्व आलोच के, पडिक्कम करके, निंद के, निःशल्य होकर के, सब्वं पाणाइवायं पच्चकखामि, सब्वं मुसावायं पच्चकखामि, सब्वं अदिण्णादाणं पच्चकखामि, सब्वं मेहुणं पच्चकखामि, सब्वं परिग्रहं पच्चकखामि, सब्वं कोहं माणं जाव मिच्छादंसणसल्लं सब्वं अकरणिज्जं जोगं पच्चकखामि, जावज्जीवाए तिविहं तिविहेणं न करेमि, न कारवेमि, करंतंपि अन्नं न समणुजाणामि, मणसा, वयसा, कायसा, ऐसे अठारह पापस्थान पच्चकख के, सब्वं असणं, पाणं, खाइमं, साइमं, चउब्बिहंपि आहारं पच्चकखामि जावज्जीवाए, ऐसे चारों आहार पच्चकख के जं पियं इमं सरीरं इट्टं, कंतं, पियं, मणुण्णं, मणामं, धिज्जं, विसासियं, सम्मयं, अणुमयं, बहुमयं,

भण्डकरण्डगसमाणं, रयणकरण्डगभूयं, मा णं सीयं, मा णं  
उण्हं, मा णं खुहा, मा णं पिवासा, मा णं वाला, मा णं चोरा,  
मा णं दंसमसगा, मा णं वाइयं, पित्तियं, कफ्फियं, संभीमं  
सण्णिवाइयं विविहा रोगायंका परीसहा उवसगा फासा फुसंतु  
एवं पिय णं चरमेहिं उस्सासणिस्सासेहिं वोसिरामि त्ति कट्टु  
ऐसे शरीर को वोसिरा के कालं अणवकंखमाणे विहरामि, ऐसी  
मेरी सद्धणा प्ररुपणा तो है, फरसना करूँ तब शुद्ध होऊँ, ऐसे  
अपच्छिम मारणंतिय संलेहणा झूसणा आराहणाए पंच-  
अइयारा जाणियव्वा न समायरियव्वा तं जहा ते आलोउं-  
इहलोगासंसप्पओगे, परलोगासंसप्पओगे, जीवियासंसप्पओगे,  
मरणासंसप्पओगे, कामभोगासंसप्पओगे, जो मे देवसिओ  
अइयारो कओ तस्स मिच्छा मि दुक्कडं ॥

### 37. तस्स धम्मस्स का पाठ

तस्स धम्मस्स के वलिपण्णत्तस्स अब्भुट्टिओमि  
आराहणाए, विरओमि विराहणाए तिविहेणं पडिकंतो वंदामि  
जिण-चउब्बीसं ।

## पाँच पदों की भाव वन्दना

पंचांग नमाकर पाँच पदों की भाव वन्दना की आज्ञा है  
कहकर निम्न दोहा बोलें ।

प्रथम सात अक्षर पढ़ो, पाँच पढ़ो चित्त लाय ।

सात, सात, नव अक्षरा, पढ़त पाप झड़ जाय ॥

**38. पहले पद श्री अरिहंत भगवान्, जघन्य बीस**  
तीर्थङ्करजी उत्कृष्ट एक सौ साठ तथा एक सौ सित्तर देवाधिदेव  
जी उनमें वर्तमान काल में 20 विहरमानजी महाविदेह क्षेत्र में  
विचरते हैं । एक हजार आठ लक्षण के धरणहार, चौंतीस  
अतिशय पैंतीस वाणी कर के विराजमान, चौसठ इन्द्रों के  
वन्दनीय, पूजनीय, अठारह दोष रहित, बारह गुण सहित (1)  
अनन्त ज्ञान, (2) अनन्त दर्शन, (3) अनन्त चारित्र, (4)  
अनन्त बल वीर्य, (5) दिव्य ध्वनि, (6) भामण्डल, (7)  
स्फटिक सिंहासन, (8) अशोक वृक्ष, (9) कुसुम वृष्टि, (10)  
देव-दुन्दुभि, (11) छत्र धरावें, (12) चँवर बिजावें, पुरुषाकार  
पराक्रम के धरणहार, ऐसे अद्वाई द्वीप पन्द्रह क्षेत्र में विचरते हैं ।  
जघन्य दो क्रोड़ केवली उत्कृष्ट नव क्रोड़ केवली, केवल

ज्ञान, केवल दर्शन के धरणहार, सर्वद्रव्य, क्षेत्र, काल और  
भाव के जाननहार-

स्वैया- नमूँ श्री अरिहंत, कर्मों का किया अन्त ।

हुआ सो केवल वन्त, करुणा भण्डारी है ॥1 ॥

अतिशय चौंतीसधार, पैंतीसवाणी उच्चार ।

समझावे नर-नार, पर उपकारी है ॥2 ॥

शरीर सुन्दरकार, सूरज सो झलकार ।

गुण है अनन्त सार, दोष परिहारी है ॥3 ॥

कहत है तिलोक रिख, मन वच काया करी ।

लुली-लुली बारम्बार, वन्दना हमारी है ॥4 ॥

ऐसे श्री अरिहन्त भगवान, दीनदयालजी महाराज,  
आपकी दिवस<sup>1</sup> सम्बन्धी अविनय आशातना की हो तो हे  
अरिहन्त भगवान ! मेरा अपराध बारम्बार क्षमा करिये, मैं हाथ  
जोड़, मान मोड़, शीश नमाकर तिक्खुत्तो के पाठ से 1008  
बार वन्दना नमस्कार करता हूँ ।

तिक्खुत्तो आयाहिणं पयाहिणं करेमि, वंदामि, नमंसामि,

- 
1. प्रातःकाल में रात्रि संबंधी, पक्खी के दिन पक्खी सम्बन्धी, चौमासी के दिन  
चौमासी संबंधी और संवत्सरी के दिन संवत्सरी संबंधी बोलें ।

सक्कारेमि, सम्माणेमि, कल्लाणं, मंगलं, देवयं, चेइयं,  
पञ्जुवासामि, मत्थएण वंदामि ।

आप मांगलिक हो, आप उत्तम हो, हे स्वामिन् ! हे  
नाथ ! आपका इस भव, पर भव, भव भव में सदाकाल शरण  
होवे ।

39. दूजे पद श्री सिद्ध भगवान महाराज 14 प्रकारे  
पन्द्रह भेदे अनन्त सिद्ध हुए हैं । आठ कर्म खपाकर मोक्ष पहुँचे  
हैं । (1) तीर्थ सिद्ध, (2) अतीर्थ सिद्ध, (3) तीर्थङ्कर सिद्ध,  
(4) अतीर्थङ्कर सिद्ध, (5) स्वयं बुद्ध सिद्ध, (6) प्रत्येक बुद्ध  
सिद्ध, (7) बुद्ध बोधित सिद्ध, (8) स्त्रीलिंग सिद्ध, (9)  
पुरुषलिंग सिद्ध, (10) नपुंसकलिंग सिद्ध, (11) स्वलिंग  
सिद्ध, (12) अन्यलिंग सिद्ध, (13) गृहस्थलिंग सिद्ध,  
(14) एक सिद्ध, (15) अनेक सिद्ध ।

जहाँ जन्म नहीं, जरा नहीं, मरण नहीं, भय नहीं, रोग  
नहीं, शोक नहीं, दुःख नहीं, दारिक्ष्य नहीं, कर्म नहीं, काया  
नहीं, मोह नहीं, माया नहीं, चाकर नहीं, ठाकर नहीं, भूख  
नहीं, तृषा नहीं, ज्योत में ज्योत विराजमान सकल कार्य सिद्ध  
करके चौदह प्रकारे पन्द्रह भेदे अनन्त सिद्ध भगवन्त हुए हैं

जो-(1) अनन्त ज्ञान, (2) अनन्त दर्शन, (3) अव्याबाध सुख, (4) क्षायिक समक्षित, (5) अटल अवगाहना, (6) अमूर्त, (7) अगुरु-लघु, (8) अनन्त आत्म सामर्थ्य, ये आठ गुण कर के सहित हैं।

सर्वैया- सकल करम टाल, वश कर लियो काल ।

मुगती में रह्या माल, आत्मा को तारी है ॥1॥

देखत सकल भाव, हुआ है जगत् राव ।

सदा ही क्षायिक भाव, भये अविकारी है ॥2॥

अचल अटल रूप, आवे नहीं भव कूप ।

अनूप स्वरूप ऊप, ऐसे सिद्ध धारी हैं ॥3॥

कहत हैं तिलोक रिख, बताओ ए वास प्रभू ।

सदा ही उगंते सूर<sup>1</sup>, वन्दना हमारी है ॥4॥

ऐसे श्री सिद्ध भगवान, दीनदयालजी महाराज, आपकी दिवस सम्बन्धी अविनय आशातना की हो तो हे सिद्ध भगवान ! मेरा अपराध बारम्बार करिये, मैं हाथ जोड़, मान मोड़, शीश नमाकर तिक्खुतो के पाठ से 1008 बार वंदना नमस्कार करता हूँ।

तिक्खुतो आयाहिणं पयाहिणं करेमि, वंदामि, नमंसामि,

---

1. सायंकाल के समय “सदा ही सायंकाल बोलें।”

सक्करेमि, सम्माणेमि, कल्लाणं, मंगलं, देवयं, चेइयं,  
पञ्जुवासामि, मत्थएण वंदामि ।

आप मांगलिक हो, आप उत्तम हो, हे स्वामिन् ! हे  
नाथ ! आपका इस भव, पर भव, भव भव में सदाकाल शरण  
होवे ।

40. तीजे पद श्री आचार्य जी महाराज 36 गुण  
करके विराजमान, पाँच महाव्रत पाले, पाँच आचार पाले,  
पाँच इन्द्रियाँ जीते, चार कषाय टाले, नववाड़ सहित शुद्ध  
ब्रह्मचर्य पाले, पाँच समिति तीन गुप्ति शुद्ध आराधें । ये 36  
गुण करके सहित हैं । आठ सम्पदा-1. आचार सम्पदा, 2.  
श्रुत सम्पदा, 3. शरीर सम्पदा, 4. वचन सम्पदा, 5. वाचना  
सम्पदा, 6. मति सम्पदा, 7. प्रयोगमति सम्पदा और 8.  
संग्रह परिज्ञा सम्पदा सहित हैं ।

सवैया— गुण है छत्तीस पूर, धरत धरम उर ।

मारत करम क्रूर, सुमति विचारी है ॥1॥  
शुद्ध सो आचारवन्त, सुन्दर है रूप कंत ।  
भणिया सब ही सिद्धांत, वाचणी सुप्यारी है ॥2॥  
अधिक मधुर वेण, कोड़ नहीं लोपे केण ।

सकल जीवों का सेण, कीरति अपारी है ॥३॥

कहत हैं तिलोक रिख, हितकारी देत सीख ।

ऐसे आचाराज जी को, वन्दना हमारी है ॥४॥

ऐसे श्री आचार्य जी महाराज ! न्याय पक्षी, भद्रिक  
परिणामी, परम पूज्य, कल्पनीय, अचित्त वस्तु के ग्रहणहार, सचित्त  
के त्यागी, वैरागी, महागुणी, गुणों के अनुरागी, सौभागी हैं । ऐसे  
श्री आचार्य जी महाराज आपकी दिवस सम्बन्धी अविनय  
आशातना की हो तो हे आचार्य जी महाराज ! मेरा अपराध  
बारम्बार क्षमा करिए । मैं हाथ जोड़, मान मोड़ शीश नमाकर  
तिक्खुतो के पाठ से 1008 बार वन्दना नमस्कार करता हूँ ।

तिक्खुतो आयाहिणं पयाहिणं करेमि, वंदामि, नमंसामि,  
सक्कारेमि, सम्माणेमि, कल्लाणं, मंगलं, देवयं, चेइयं,  
पञ्जुवासामि, मत्थएण वंदामि ॥

आप मांगलिक हो, आप उत्तम हो, हे स्वामिन् ! हे  
नाथ ! आपका इस भव, पर भव, भव भव में सदाकाल शरण  
होवे ।

41. चौथे पद श्री उपाध्याय जी महाराज 25 गुण  
करके विराजमान, ग्यारह अंग, बारह उपांग, चरण सत्तरी,

करण सत्तरी ये पच्चीस गुण करके सहित हैं, ग्यारह अंग का पाठ अर्थ सहित सम्पूर्ण जाने, चौदह पूर्व के पाठक और बत्तीस सूत्रों के जानकार हैं-

**ग्यारह अंग**—आचारांग, सूयगडांग, ठाणांग, समवायांग, भगवती, ज्ञाताधर्मकथा, उवासगदसा, अंतगडदसा, अणुत्तरो-ववाइय, प्रशनव्याकरण, विपाक सूत्र।

**बारह उपांग**—उववाई, रायप्पसेणी, जीवाजीवाभिगम, पन्नवणा, जम्बूदीवपन्नत्ती, चन्दपन्नत्ती, सूरपन्नत्ती, निरयावलिया, कप्पवडंसिया, पुष्फिया, पुष्फचूलिया, वण्हिदसा।

**चार मूल सूत्र**—उत्तराध्ययन, दशवैकालिक, नन्दीसूत्र और अनुयोगद्वार सूत्र।

**चार छेद**—दशाश्रुत स्कन्ध, वृहत्कल्प, व्यवहार सूत्र, निशीथ सूत्र और

**बत्तीसवाँ आवश्यक सूत्र**—तथा अनेक ग्रन्थों के जानकार, सात नय, चार निक्षेप, निश्चय, व्यवहार, चार प्रमाण आदि स्वमत तथा अन्यमत के जानकार। मनुष्य या देवता कोई भी विवाद में जिनको छलने में समर्थ नहीं, जिन नहीं पण जिन सरीखे, केवली नहीं पण केवली सरीखे हैं।

सवैया— पढ़त इग्यारह अंग, कर्मों से करे जंग ।

पाखंडी को मान भंग, करण हुशियारी है ॥1 ॥

चवदे पूर्वधार, जानत आगम सार ।

भवियन के सुखकार, भ्रमता निवारी है ॥2 ॥

पढ़ावे भविक जन, स्थिर कर देत मन ।

तप करि तावे तन, ममता को मारी है ॥3 ॥

कहत है तिलोक रिख, ज्ञान भानु परतिख ।

ऐसे उपाध्याय जी को, वन्दना हमारी है ॥4 ॥

ऐसे श्री उपाध्याय जी महाराज मिथ्यात्व रूप अन्धकार के मेटणहार, समकित रूप उद्घोत के करणहार, धर्म से डिगते प्राणी को स्थिर करने वाले, सारए, वारए, धारए इत्यादि अनेक गुण करके सहित हैं । ऐसे श्री उपाध्यायजी महाराज आपकी दिवस सम्बन्धी अविनय आशातना की हो तो, हे उपाध्याय जी महाराज ! मेरा अपराध बारम्बार क्षमा करें । मैं हाथ जोड़, मान मोड़, शीश नमाकर तिक्खुत्तो के पाठ से 1008 बार वन्दना नमस्कार करता हूँ ।

तिक्खुत्तो आयाहिणं पयाहिणं करेमि, वंदामि, नमंसामि,  
सक्कारेमि, सम्माणेमि, कल्लाणं, मंगलं, देवयं, चेइयं,  
पञ्जुवासामि, मत्थएण वंदामि ॥

आप मांगलिक हो, आप उत्तम हो, हे स्वामिन् ! हे नाथ ! आपका इस भव, पर भव, भव भव में सदा काल शरण होवे ।

42. पाँचवें पद ‘नमो लोए सब्ब साहूण’ अढाई द्वीप पन्द्रह क्षेत्र रूप लोक के विषय में सर्व साधुजी महाराज जघन्य दो हजार क्रोड़, उत्कृष्ट नव हजार क्रोड़ जयवन्ता विचरें। पाँच महाव्रत पाले, पाँच इन्द्रिय जीते, चार कषाय टाले, भाव सच्चे, करण सच्चे, जोग सच्चे, क्षमावंत, वैराग्य वंत, मन समाधारणया, वय समाधारणया, काय समाधारणया, नाण सम्पन्ना, दंसण सम्पन्ना, चारित्त सम्पन्ना, वेदनीय समाअहियासन्निया, मारणंतिय समाअहियासन्निया ऐसे सत्ताईस गुण करके सहित हैं। पाँच आचार पाले, छहकाय की रक्षा करे, सात भय त्यागे, आठ मद छोड़े, नववाड सहित शुद्ध ब्रह्मचर्य पाले, दस प्रकारे यति धर्म धारे, बारह भेदे तपस्या करे, सतरह भेदे संयम पाले, अठारह पापों को त्यागे, बाईस परिषह जीते, तीस महामोहनीय कर्म निवारे, तैनीस आशातना टाले, बयालीस दोष टाल कर आहार पानी लेवे, सैन्तालीस दोष टाल कर भोगे, बावन अनाचार टाले, तेड़िया (बुलाये)

आवे नहीं, नेतीया जीमे नहीं, सचित्त के त्यागी, अचित्त के भोगी, लोच करे, नंगे पैर चले इत्यादि कायकलेश और मोह ममता रहित हैं ।

सर्वैया—आदरी संयम भार, करणी करे अपार ।

समिति गुप्तिधार, विकथा निवारी है ॥1॥

जयणा करे छः काय, सावद्य न बोले वाय ।

बुझाय कषाय लाय, किरिया भण्डारी है ॥2॥

ज्ञान भणे आठों याम, लेवे भगवन्त नाम ।

धरम को करे काम, ममता कूँ मारी है ॥3॥

कहत है तिलोक रिख, करमों को टाले विख ।

ऐसे मुनिराज ताकूँ, वन्दना हमारी है ॥4॥

ऐसे मुनिराज महाराज आपकी दिवस संबंधी अविनय आशातना की हो तो हे मुनिराज महाराज ! मेरा अपराध बारम्बार क्षमा करिये । मैं हाथ जोड़, मान मोड़, शीश नमाकर तिकखुत्तो के पाठ से 1008 बार वन्दना नमस्कार करता हूँ ।

तिकखुत्तो आयाहिणं पयाहिणं करेमि, वंदामि, नमंसामि, सक्कारेमि, सम्माणेमि, कल्लाणं, मंगलं, देवयं, चेइयं, पञ्जुवासामि, मत्थएण वंदामि ॥

आप मांगलिक हो, आप उत्तम हो, हे स्वामिन् ! हे  
नाथ ! आपका इस भव, पर भव, भव भव में सदा काल शरण  
होवे ।

### दोहा

सागर में पाणी घणों, गागर में न समाय ।  
पाँचों पदों में गुण घणा, माँ सू कह्हो न जाय ॥

### 43. अनन्त चौबीसी का पाठ

अनन्त चौबीसी जिन नमूँ, सिद्ध अनन्ता क्रोड़ ।  
केवल ज्ञानी गणधरा, वन्दू बे कर जोड़ ॥1 ॥  
दोय क्रोड़ केवल धरा, विहरमान जिन बीस ।  
सहस्र युगल क्रोड़ी नमूँ, साधु नमूँ निश दीस ॥2 ॥  
धन साधु धन साध्वी, धन धन है जिन-धर्म ।  
ये सुमर्या पातक झरे, दूटे आठों कर्म ॥3 ॥  
अरिहन्त सिद्ध समरूँ सदा, आचारज उपाध्याय ।  
साधु सकल के चरण को, वन्दू शीश नमाय ॥4 ॥  
अँगुष्ठे अमृत बसे, लब्धि तणा भण्डार ।  
श्री गुरु गौतम सुमरिये, वांछित फल दातार ॥5 ॥  
इसके बाद खड़े होकर अग्रलिखित पाठ बोलें ।

## 44. आयरिय उवज्ज्ञाए का पाठ

आयरिय-उवज्ज्ञाए, सीसे साहम्मिए कुल-गणे य ।  
जे मे केइ कसाया, सब्बे तिविहेण खामेमि ॥१ ॥  
सब्बस्स समण-संघस्स, भगवओ अंजलि करिअ सीसे ।  
सब्बं खमावइत्ता, खमामि सब्बस्स अहयं पि ॥२ ॥  
सब्बस्स जीव-रासिस्स, भावओ धम्मं निहिय नियचित्तो ।  
सब्बं खमावइत्ता, खमामि सब्बस्स अहयं पि ॥३ ॥

## 45. अढाई द्वीप पन्द्रह क्षेत्र का पाठ

ऐसे अढाई द्वीप पन्द्रह क्षेत्र में तथा बाहर, श्रावक-  
श्राविका दान देवें, शील पाले, तपस्या करे, शुद्ध भावना भावे,  
संवर करे, सामायिक करे, पौष्ठ करे, प्रतिक्रमण करे, तीन  
मनोरथ चिन्तवे, चौदह नियम चितारे, जीवादि नव पदार्थ जाने,  
ऐसे श्रावक के इक्कीस गुण करके युक्त, एक ब्रतधारी जाव  
बारह ब्रतधारी, भगवन्त की आज्ञा में विचरें ऐसे बड़ों से हाथ  
जोड़, पैर पड़कर, क्षमा माँगता हूँ । आप क्षमा करें, आप क्षमा  
करने योग्य हैं और शेष सभी को खमाता हूँ ।

## 46. चौरासी लाख जीव योनि का पाठ

सात लाख पृथ्वी काय, सात लाख अप्काय, सात लाख  
तेऊ काय, सात लाख वायु काय, दस लाख प्रत्येक वनस्पति  
काय, चौदह लाख साधारण वनस्पति काय, दो लाख बेइन्द्रिय,  
दो लाख तेइन्द्रिय, दो लाख चउरिन्द्रिय, चार लाख देवता,  
चार लाख नारकी, चार लाख तिर्यंच पंचेन्द्रिय, चौदह लाख  
मनुष्य, ऐसे चार गति चौबीस दण्डक, चौरासी लाख जीव  
योनि में सूक्ष्म, बादर, पर्याप्त, अपर्याप्त जीवों में से किसी  
जीव का हालते, चालते, उठते, बैठते, सोते जागते, हनन  
किया हो, हनन कराया हो, हनताँ प्रति अनुमोदन किया हो,  
छेदा हो, भेदा हो, किलामना उपजाई हो तो मन वचन काया  
करके (18,24,120) अठारह लाख चौबीस हजार एक सौ  
बीस प्रकारे जो मे देवसिओ अइयारो कओ तस्स मिच्छा मि  
दुक्कड़ ॥

## 47. क्षमापना-पाठ

खामेमि सब्वे जीवा, सब्वे जीवा खमंतु मे ।  
मिति मे सब्व भूएसु, वेरं मज्जं न केणई ॥1॥  
एवमहं आलोइय-निन्दिय-गरिहिय-दुगुंछियं सम्मं ।  
तिविहेणं पडिककंतो, वंदामि जिण-चउब्बीसं ॥2॥

## 48. प्रायश्चित्त का पाठ

देवसिय<sup>1</sup>-पायच्छित्त-विसोहणतथं करेमि काउस्सगं ।

## 49. समुच्चय पच्चकखाण का पाठ

गंठिसहियं, मुट्ठिसहियं, नमुक्कारसहियं, पोरिसियं, साढू-  
-पोरिसियं, तिविहंपि चउविहंपि आहारं असणं, पाणं, खाइमं,  
साइमं, अपनी-अपनी धारणा प्रमाणे पच्चकखाण, अन्नत्थः-  
णाभोगेण, सहसागारेण, महत्तरागारेण, सब्व समाहिवत्ति-  
यागारेण वोसिरामि ।<sup>2</sup>

- 
- प्रातःकाल में राइय, पक्खी को पक्खिय, चौमासी को चाउम्मासियं और संवत्सरी को संवच्छरिय बोलें।
  - स्वयं पच्चकखाण करें तो ‘वोसिरामि’ दूसरों को करावें तो ‘वोसिरे-वोसिरे’ बोलें।

## 50. अन्तिम पाठ

पहला सामायिक, दूसरा चउवीसत्थव, तीसरी वन्दना,  
चौथा प्रतिक्रमण, पाँचवाँ काउस्सग्ग और छट्ठा प्रत्याख्यान  
इन 6 आवश्यकों में अतिक्रम, व्यतिक्रम, अतिचार, अनाचार  
जानते अजानते कोई दोष लगा हो तथा पाठ उच्चारण करते  
समय काना, मात्रा, अनुस्वार, पद, अक्षर, हस्व, दीर्घ,  
न्यूनाधिक, विपरीत पढ़ने में आया हो तो अनन्त सिद्ध केवली  
भगवान की साक्षी से देवसिय सम्बन्धी तस्स मिच्छा मि  
दुक्कडं ॥

मिथ्यात्व का प्रतिक्रमण, अब्रत का प्रतिक्रमण, प्रमाद  
का प्रतिक्रमण, कषाय का प्रतिक्रमण, अशुभ योग का  
प्रतिक्रमण इन पाँच प्रतिक्रमणों में से कोई प्रतिक्रमण नहीं  
किया हो या अविधि से किया हो तथा ज्ञान, दर्शन, चारित्र,  
तप सम्बन्धी कोई दोष लगा हो तो देवसिय सम्बन्धी तस्स  
मिच्छा मि दुक्कडं ॥

गये काल का प्रतिक्रमण, वर्तमान काल की सामायिक, आगामी काल के पच्चक्खाण जो भव्य जीव करते हैं, कराते हैं, करने वाले का अनुमोदन करते हैं उन महापुरुषों को धन्य है, धन्य है ।

सम, संवेग, निर्वेद, अनुकम्पा और आस्था, ये पाँच व्यवहार समक्षित के लक्षण हैं, इनको मैं धारण करता हूँ । देव अरिहन्त, गुरु निर्गन्थ, केवली भाषित दयामय धर्म ये तीन तत्त्व सार, संसार असार भगवन्त महाराज आपका मार्ग सच्चं, सच्चं, सच्चं थवथुई मंगलं ।

### दोहा

आगे आगे दव बले, पीछे हरिया होय ।

बलिहारी उस वृक्ष की, जड़ काट्याँ फल होय ॥

॥ प्रतिक्रमण सूत्र समाप्त ॥

## प्रतिक्रमण की विधि

सर्वप्रथम तिक्खुत्तो के पाठ से वन्दना करें।

1. **चउवीसत्थव की आज्ञा-नवकार मंत्र, इच्छाकारेण,** तस्सउत्तरी, एक लोगस्स के पाठ का काउस्सग्ग करें, कायोत्सर्ग शुद्धि का पाठ, एक लोगस्स प्रकट, दो बार नमोत्थुणं, तिक्खुत्तो के पाठ से तीन बार वन्दना।
2. **प्रतिक्रमण ठाने (करने) की आज्ञा-इच्छामि णं** भंते, नवकार मन्त्र, तिक्खुत्तो के पाठ से तीन बार वन्दना।
3. **प्रथम आवश्यक की आज्ञा-करेमि भंते, इच्छामि** ठामि, तस्स उत्तरी, 99 अतिचारों का काउस्सग्ग, (काउस्सग्ग में आगमे तिविहे, अरिहंतो महदेवो, बारह स्थूल, छोटी संलेखना, 99 अतिचारों के समुच्चय का पाठ, अठारह पापस्थान, इच्छामि ठामि का चिन्तन करें) कायोत्सर्ग शुद्धि का पाठ, तिक्खुत्तो के पाठ से तीन बार वन्दना।

4. दूसरे आवश्यक की आज्ञा-लोगस्स का पाठ, तिक्खुत्तो के पाठ से तीन बार वन्दना ।
5. तीसरे आवश्यक की आज्ञा-इच्छामि खमासमणो के पाठ से विधिसहित दो बार वन्दना, तिक्खुत्तो के पाठ से तीन बार वन्दना ।
6. चौथे आवश्यक की आज्ञा-
  - (अ) आगमे तिविहे, अरिहंतो महदेवो, बारह स्थूल, छोटी संलेखना, 99 अतिचारों के समुच्चय का पाठ, अठारह पापस्थान, इच्छामि ठामि, तस्स सव्वस्स का पाठ, तिक्खुत्तो के पाठ से तीन बार वन्दना ।
  - (ब) श्रावक सूत्र जी की आज्ञा-नवकार मंत्र, करेमि भंते, चत्तारि मंगलं, इच्छामि ठामि, इच्छाकारेण, आगमे तिविहे, दंसण समकित, बारह ब्रत, बड़ी संलेखना (पालथी लगाकर), अठारह पापस्थान, इच्छामि ठामि, तस्स धम्मस्स, इच्छामि खमासमणो के पाठ से विधिवत् दो बार वन्दना ।

- (स) पाँच पदों की वन्दना—नवकार मंत्र, पाँचों  
पद, अनन्त चौबीसी, आयरिय उवज्ञाए,  
अढ़ाई द्वीप का पाठ, चौरासी लाख जीवयोनि  
का पाठ, क्षमापना पाठ, अठारह पापस्थान,  
तिक्खुतो के पाठ से तीन बार वन्दना ।
7. पाँचवें आवश्यक की आज्ञा—प्रायश्चित्त का पाठ,  
नवकार मंत्र, करेमि भंते, इच्छामि ठामि, तस्सउत्तरी,  
लोगस्स का (सामान्य दिनों में 4, पक्खी को 8,  
चौमासी को 12 तथा संवत्सरी को 20 लोगस्स  
का) काउस्सग करें, कायोत्सर्ग शुद्धि का पाठ एवं  
लोगस्स प्रकट में, इच्छामि खमासमणो के पाठ से  
विधिवत् दो बार वन्दना, तिक्खुतो के पाठ से तीन  
बार वन्दना ।
8. छट्टे आवश्यक की आज्ञा—समुच्चय पच्चक्खाण  
का पाठ, प्रतिक्रमण समुच्चय (अन्तिम पाठ), नमोत्थु  
णं दो बार, तिक्खुतो के पाठ से तीन बार वन्दना ।



## सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल के विविध सेवा सोपान

---

जिनवाणी हिन्दी मासिक पत्रिका का प्रकाशन

---

जैन इतिहास, आगम एवं अन्य सत्साहित्य का प्रकाशन

---

अखिल भारतीय श्री जैन विद्वत् परिषद का संचालन

---

उक्त प्रवृत्तियों में दानी एवं प्रबुद्ध चिन्तकों के  
रचनात्मक सक्रिय सहयोग की अपेक्षा है।

सम्पर्क सूत्र  
मंत्री

सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल

दुकान नं. 182 के ऊपर, बापू बाजार

जयपुर-302003 (राजस्थान)

दूरभाष : 0141-2575997, फैक्स : 4068798

ई-मेल : [sgpmandal@yahoo.in](mailto:sgpmandal@yahoo.in)